अध्याय–पंचम

निष्कर्ष एवं सुझाव

5.0 भूमिका

5.1 अध्ययन के उददे्श्य

5.2 परिकल्पनाएँ

5.3 निष्कर्ष

5.4 सुझाव

5.5 भविष्य के लिये सुझाव

अध्याय पंचम

निष्कर्ष एवं सुझाव

5.0 भूमिका–

प्रस्तुत अध्याय में अध्याय–4 में किये गये प्रदत्तों के विश्लेषण और व्याख्या के आधार पर निष्कर्ष एवं सुझाव देने के प्रयास किया गया है। शोधकर्ता द्वारा विद्यार्थियों की अधिगम शैली तथा उपलब्धि के आधार पर निम्नलिखित निष्कर्ष एवं सुझाव दिये गये है।

5.1 अध्ययन के उद्देश्य –

1. कक्षा–8वीं के विद्यार्थियों की अधिगम शैली को ज्ञात करना।
2. कक्षा–8वीं के शहरी विद्यार्थियों की अधिगमशैली एवं उपलब्धि के बीच संबंध ज्ञात करना।
3. कक्षा–8वीं के ग्रामीण विद्यार्थियों की अधिगम शैली एवं उपलब्धि और उपलब्धि के बीच संबंध को ज्ञात करना।

5.2 परिकल्पनाएँ –

1. ''कक्षा–8वीं के शहरी विद्यार्थियों की अधिगम शैली एवं उपलब्धि के बीच सार्थक संबंध नहीं है।''
2. ''कक्षा–8वीं के ग्रामीण विद्यार्थियों की अधिगम शैली एवं उपलब्धि के बीच सार्थक संबंध नहीं है।''
3. ''कक्षा–8वीं के विद्यार्थियों की अधिगम शैली एवं उपलब्धि के बीच सार्थक संबंध नहीं है।''

5.3. निष्कर्ष –

1. शहरी विद्यार्थियों की अधिगम शैली एवं उपलब्धि के बीच सार्थक संबंध देखने मिला।
2. ग्रामीण विद्यार्थियों की अधिगम शैली एवं उपलब्धि के बीच सार्थक संबंध नहीं मिला।
3. कक्षा–8वीं के विद्यार्थियों के अधिगम शैली और उपलब्धि में संबंध नहीं मिला।

5.4. सुझाव –

अधिगम योजनाएँ और शैली कईबार परस्पर परिवत्रनशील होते है परन्तु शैली का उपयोग विशेष रूप में अलग से होता है। शैली किसी भी व्यक्ति के व्यवहार वर्तन की गुणवक्ता है।

शैली के चुनाव में व्यक्तिगत भिन्नता सांकेतिक है। प्रत्ययों को सीखने के अनेक ढ़ग है। जिसमें से उपयुक्त चुनाव किया जाता है।

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्ता ने पाया कि विद्यार्थियों को उनकी प्रकृति प्रदत्त अधिगम शैली से सीखते है। जबकि विद्यालयों में एकमात्र या किसी विशेष परम्परागत शैली से पढ़ाया जाता है। जो विद्यार्थियों को अनुकूल नहीं है। यहीं कारण उनकी उपलब्धि को प्रभावित कर रहा है।

शहरी विद्यालयों के विद्यार्थियों की उपलब्धि और अधिगम शैली का संबंध और प्रमाण सभी चारों शैली में समान रहा है। अर्थात् इसको प्रभावित करनेवाले कारण भौतिक सुविधाएँ तथा अध्याय कों और अभिभावकों की बच्चों की शिक्षा के प्रति जागरूकता होना संभव है। जबकि ग्रामीण विद्यार्थियों की शिक्षा स्तर बिलकुल चिंताजनक है। उनकी उपलब्धि का प्रमाण भी निम्न है। यह बच्चें शहरी बच्चों से श्रेष्ठता में कही भी कम नहीं है

परन्तु उनको उनकी अधिगम शैली को पहचानकर पढ़ाया नहीं जाता। तथा भौतिक उपकरणों की कभी और अध्यापको की कम निष्ठा तथा अभिभावकों की अजागृतता भी इसके संभवित कारण है।

विद्यार्थियों की उपलब्धि में वृद्धि करने के लिये निम्नलिखित बाते आवश्यक है–

1. कक्षा–8 में प्रवेश से पहले सभी बालकों की अधिगम शैली का परीक्षण होना चाहिए।
2. ग्रामीण विद्यार्थियों पर ध्यान देना अति आवश्यक है।
3. शहरी विद्यालयों में कही ना कही अधिगम शैली को ध्यान में रखकर पढ़ाया जाता है। अतः उसी तरह का प्रयास ग्रामीण अध्यापकों के द्वारा किया जाना चाहिए।
4. लड़कों और लड़कियों की अधिगम शैली में विशेष अंतर नहीं है। अतः वर्गखण्डों में, तथा अध्यापकों के वर्तन से लिंग–भेद आधारित भ्रमणाओं को हटाना चाहिए।
5. अधिगम शैली और उपलब्धि के बीच विशिष्ट संबंध देखने मिला है। अतः सफलता के प्रमाण को बढ़ाने के लिए अधिगम शैली को महत्व देनेवाली शिक्षा–प्रणाली का अपनाना चाहिए।
6. शिक्षकों को विशेष प्रशिक्षण देकर उनको अधिगम शैली का ज्ञान होना चाहिए।
7. वर्गखण्डों में शिक्षकों द्वारा अपनायी गयी परंपरागत व्याख्यान पद्धति को तिलांजलि देकर नयी पद्धतियों जो अधिगम शैली को आधार प्रदान करनी हो, उसे अपनाना चाहिए।

8. अधिगम शैली को ज्ञात करके उसके भिन्न-भिन्न समूह बनाकर उन वर्गखण्डों में उसी अधिगम शैली से सीखने वाले बच्चों को रखना चाहिए।

9. ऐसा करना कठिन है परन्तु असंभव नहीं है, उसके लिये शिक्षण-प्रशिक्षण में अधिगम शैली पर आधारित प्रशिक्षण अभ्यासक्रम को अपनाना चाहिए।

10. सभी विषयों को सीखने की दो से अधिक शैली होती है, अतः ऐसी व्यवस्था का निर्माण होना चाहिए जिसमें विद्यार्थी अपनी प्रकृति प्रदत्त शैली से सीखने के लिये विशाल फलक को प्राप्त करें।

5.5. भविष्य के लिये सुझाव –

प्रस्तुत शोधकार्य को सीमांकन गुजरात राज्य के भावनगर जिले के शहरी एवं ग्रामीण विद्यालय के कक्षा-8वीं के विद्यार्थियों तक सीमित था, किन्तु भविष्य में यह सीमांकन विस्तारित करके भावनगर जिले के उपरांत गुजरात राज्य, तथा समग्र देश के विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में लेकर पीएच.डी. के लिये संशोधन हो सकते है।

इसके उपरांत भविष्य के लिये सुझाव इस प्रकार है-

1. विद्यार्थियों की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का अधिगम शैली तथा उपलब्धि पर प्रभाव ।

2. अधिगम शैली एवं अभिगम वृत्ति का विद्यार्थियों की उपलब्धि पर प्रभाव।

3. गुणवत्ता युक्त शिक्षण एवं सफलता के मूल आधार अधिगम शैलीः एक अध्ययन।

4. अधिगम शैली एवं उपलब्धि के बीच सह-संबंध का अध्ययन।

5. अधिगम शैली, सामजस्य एवं उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन।

6. ज्ञानात्मक शैली और अधिगम शैली का तुलनात्मक अध्ययन।

7. व्यख्यान पद्धति का अधिगम शैली और उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन।

8. विकलांग और विशिष्ट बालकों की अधिगम शैली और उपलब्धि का अध्ययन।

9. ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की असफलता एवं शालात्याग के मूल में अधिगम शैली तथा न समझ पाने का बोझः एक अध्ययन।

10. शिक्षा के बोझ से मुक्त करनावाले मुख्य परिबल के रूप में अधिगम शैली :एक अध्ययन।

11. उच्च एवं निम्न सफलता प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों की अधिगम शैली का अध्ययन।

12. शिक्षकों की सीखने की पद्धति एवं बच्चों की अधिगम शैली तथा सफलता का अध्ययन।

13. अधिगम शैली में अवरोधक एवं सहायक घटकों का तुलनात्मक अध्ययन।

14. अधिगम शैली और सफलता पर माध्यमों का रचनात्मक प्रभावः एक अध्ययन।

15. लड़कों और लड़कियों की अधिगम शैली एवं उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन।